अध्याय – 13

# वानिकी अनुसंधान एवं मानव संस्थान विकास केन्द्र छिंदवाड़ा

मानव संसाधन विशेषकर जनजातीय आबादी का विकास करने तथा वानिकी अनुसंधान के प्रमुख क्षेत्रों पर कार्य करने की योजना के साथ वानिकी अनुसंधान एवं मानव संसाधन विकास केन्द्र, छिंदवाड़ा, जो वर्तमान में उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के अधीन कार्यरत है, 30 मार्च, 1995 से अस्तित्व में आया। इसके मुख्य उद्देश्य में शामिल हैं :

* पोषणीय वन प्रबन्धन के लिए पद्धतियों का विकास करना।
* पारिस्थितिकी एवं आनुवंशिकी के ठोस सिद्धान्तों पर आधारित आधुनिक वैज्ञानिक वन प्रबन्धन् द्वारा वन उत्पादकता बढ़ाना।
* वन उत्पादों के उपयोग में सुधार करना।
* संसाधन प्रबन्धन एवं पर्यावरण सुरक्षा से संबंधित सामाजिक आर्थिक पहलुओं पर अध्ययन करना।
* वानिकी के विविध पहलुओं पर प्रशिक्षण देकर मानव संसाधन विकास करना।

## 1997-98 के दौरान पूरी की गई परियोजनायें

कोई नहीं

## 1997-98 के दौरान जारी पुरानी परियोजनायें

**परियोजना 1** : सतपुड़ा पठार में पौधशालाओं, रोपणों, प्राकृतिक वनों में एम्ब्लिका आफिसिनोलिस, मेलाइन्स प्रजातियों और टर्मिनेलिया प्रजातियों के मुख्य नाशिकीटों की पहचान करना और इनके नियंत्रण उपायों की जांच करना।

**उद्देश्य** : सतपुडा पठार की लक्ष्य प्रजातियों के मुख्य नाशिकीटों की पहचान और जांच करना।

* प्रमुख नाशिकीटों और विस्तार को अभिलिखित किया गया।
* नाशिकीटों के विरुद्ध एम्ब्लिका आफिसिनेलिस की चार किस्मों की जांच की गई।
* परजीवी यथा एपेन्टीलस इकन्यूमॉन और परभक्षी यथा कोथकीरकोना तथा कॉक्सीनीलिड भृंग अभिलिखित किए गए। बहेड़ा (टी. बेलीरिका) बीज घुन एम टर्मिनेला के विरुद्ध 2 प्रतिशत फॉलिडॉल डस्ट के मिक्षण को सबसे प्रभावी पाया गया।

**परियोजना 2** : छिंदवाड़ा जिले में संयुक्त वन प्रबन्धन के मानीटरन और मूल्यांकन के लिए पैरामीटरों के मानकीकरण पर अध्ययन।

**उद्देश्य** : छिंदवाड़ा जिले में संयुक्त वन प्रबन्धन के मानीटरन और मूल्यांकन के लिए विभिन्न पैरामीटरों का मानकीकरण।

**उपलब्धियां**

- छिंदवाड़ा जिले के छः गाँवों के लिए सूक्ष्म योजनाएं तैयार की गई।
- अन्य प्रतिदर्श गांवों के सूक्ष्म नियोजन का कार्य चल रहा है।
- ग्राम स्तर पर पांच कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

**परियोजना 3** : नर्सरी और रोपण प्रौद्योगिकी में जूनियर/सीनियर प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम।

**उद्देश्य** : ग्रामीण आबादी में वन आधारित आवश्यकताओं की विविधता द्वारा ग्रामीण स्व रोजगार एवं वनों के संरक्षण के लिए मानव संसाधन का विकास करना और उत्पादकता में वृद्धि करना।

**उपलब्धियां**

नौ प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षित किया गया।

**परियोजना 4:** कुछ देशज वन प्रजातियों की छाल, पत्तियों, फलों और जड़ों के उपयोग के लिए पादप-रासायनिक जांच।

**उद्देश्य** : कुछ देशज वन प्रजातियों की पत्तियों, फलों और जड़ों के उपयोग की सम्भावनाओं का पता लगाना।

**उपलब्धियां**

विभिन्न विलायकों में प्रजातियों, यथा-शुटीरिया हिर्सुटा और ब्रायोनिया ल्यूसिनिओसा, के पादप पदार्थ को निष्कर्षित किया गया।

कवकीरोधी और कीटनाशीय क्रियाकलापों के लिए सार की प्रारम्भिक जांच की गई।

**1997-98 के दौरान शुरु की गई नई परियोजनायें**

**परियोजना 5** : वन प्रबन्धन पद्धतियों और वन वृक्षों के पुनर्जनन व्यवहार पर विशेष जोर देते हुए उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वनों की संरचना एवं कार्य।

**उद्देश्य** : उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वनों की संरचना (विभिन्न प्रजातियों में पादप सामाजिकी, पादप विविधता, आबादी संरचना, वितरण पैटर्न, पुनर्जनन व्यवहार और संसाधन सुवितरण) और कार्य (जैवमात्रा + पोषक चक्र) का विश्लेषण करना।

पौधशाला एवं रोपण प्रौद्योगिकी में वरिष्ठ प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम (किटप्लाई रोपण, रायपुर)

पौधशाला एवं रोपण प्रौद्योगिकी में वरिष्ठ प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम (यूकेलिप्टस रोपण, बिलासपुर)

छिंदवाड़ा जिले की पटालकोट घाटी में जैवविविधता में समृद्ध क्षेत्र

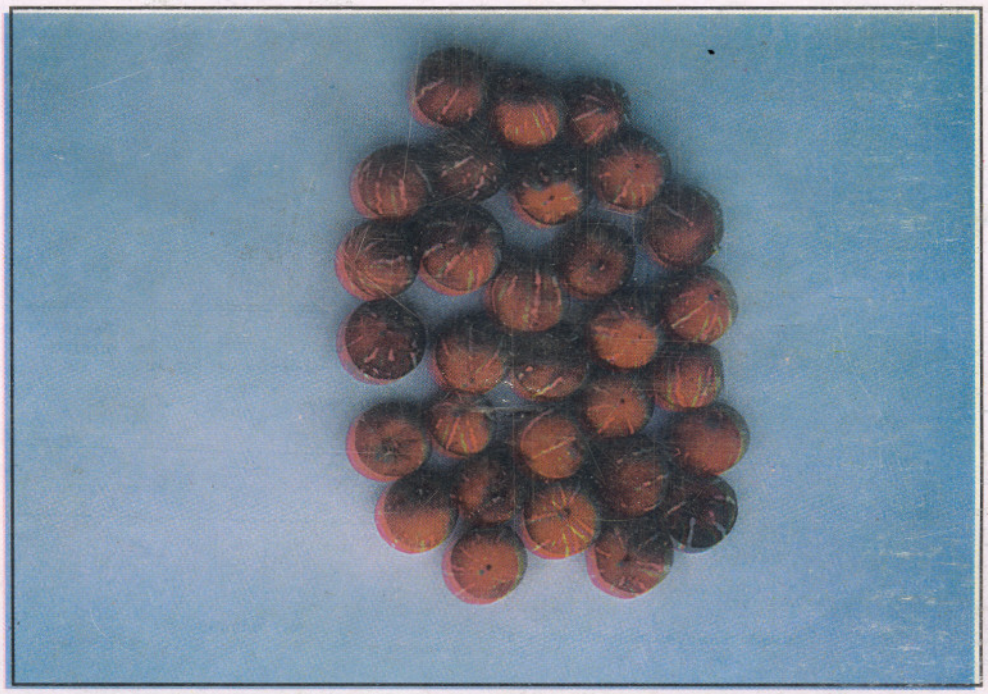

ब्रायोनिया ल्यूसिनिओसा के फल

**की गई प्रगति**

दक्षिण छिंदवाड़ा प्रभाग के सिलावानी रेंज में स्थल का चयन किया गया। पादप साामाजिकीय अध्ययन पूरे किए गए।

**परियोजना 6** : बुकानेनिया लेंजन की उपयुक्त कायिक प्रवर्धन विधियों का मानकीकरण।

**उद्देश्य** : बुकानेनिया लेंजन की उपयुक्त कायिक प्रवर्धन विधियां विकसित और मानकीकरण करना।

**की गई प्रगति**

प्रयोगों के लिए पौधशाला की स्थापना की गई।

**परियोजना 7** : (नाबार्ड परियोजना) - विभिन्न कृषि पारिस्थितिकीय क्षेत्रों के लिए कृषि वानिकी मॉडलों का विकास।

**उद्देश्य** : कृषिवानिकी मॉडलों का विकास करना।

**की गई प्रगति**

काराबोह जलसंभर में प्रयोग तैयार करने और उन्नत रोपण स्टॉक पौधशाला की स्थापना के लिए प्रक्रिया शुरु कर दी गई है।

**विस्तार**

(क) सृजित सुविधाएं एवं सम्पादित सेवायें :

(i) बारह गाँव वन-समिति के लिए सूक्ष्म नियोजन पर कार्य पूरा किया गया तथा 60,000/- रुपये का राजस्व सृजित किया गया।

(ii) स्थानीय वन विभाग, गैर-सरकारी संगठन तथा शैक्षिक संस्थानों के लिए पुस्तकालय सुविधाएं खोली गई।

(iii) केन्द्र के पास वानिकी के विभिन्न पहलुओं पर काफी संख्या में विडियों फिल्मों का संग्रह है। कार्यशालाओं के दौरान जेसीसी/एससीसी के प्रशिक्षणार्थियों और किसानों में इनका प्रदर्शन किया गया।

(ख) प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण :

(i) निचले स्तर के कार्यकर्ताओं की तकनीकी दक्षताओं में सुधार लाने के लिए जूनियर प्रमाण-पत्र प्रशिक्षण पाठ्यक्रम शुरु किया गया।

(ii) **शिक्षण सहायता** : केन्द्र के अधिकारियों में राज्य वन विभाग, उद्यमकर्ता विकास संस्थान और डब्ल्यू डब्ल्यू एक, भारत के प्रशिक्षण कार्यक्रमों विशेषज्ञों के रूप में कार्य किया।

(iii) **सेमिनार, कार्यशालाएं आदि :** चौराई, चिन्डी, हराई, बटकाखापा और अमरवाड़ा में संयुक्त वन प्रबन्धन के तहत पांच ग्राम स्तर कार्यशालाएं आयोजित की गई।

(ग) **अन्य संगठन/संस्थानों/राज्यों आदि से सहानुबंध :**

राज्य वन विभाग, कृषि विज्ञान केन्द्र, उद्यमिता विकास केन्द्र शैक्षिक संस्थानों, गैर-सरकारी संगठनों और वन किसानों के साथ प्रभावी सहानुबंध विकसित किए गए।

(घ) **संस्थान द्वारा निकाले गए प्रकाशन एवं विस्तार :**

दो बुलेटिन प्रकाशन की प्रक्रिया में हैं

(i) पेस्ट कन्ट्रोल मैजुअल, डा० पी० बी० मेशराम और ए.के. बिसारिया

(ii) भिलवा (सेमीकार्यस एनाकार्डियम), डा० ए. के. पाण्डे व ए. के. बिसारिया।

# वित्तीय विवरण

| उप शीर्ष | व्यय (रुपये में) |
|---|---|
| (क) राजस्व व्यय अनुसंधान | 15,62,932.00 |
| (i) प्रशासनिक सहायता | 10,70,062.00 |
| (ख) ऋण और अग्रिम | 43,000.00 |
| (ग) पूंजीगत व्यय | 61,621.00 |
| (घ) विश्व बैंक व्यय | 68,960.00 |
| **कुल योग** | **28,06,575.00** |